• इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी अंतरात्मा को ज्ञान, सत्य और साधना से शुद्ध रखे।

निष्कर्ष:
अंतरात्मा की आवाज मनुष्य के भीतर का सर्वोच्च नैतिक मार्गदर्शक है। जो व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनता है, वह कभी गलत मार्ग पर नहीं जाता। भारतीय नैतिकता के अनुसार – "धर्म वही है जो अंतरात्मा को संतोष दे।"

तर्क और श्रद्धा (Reason and Faith)

परिचय:
मानव जीवन में ज्ञान और आस्था, दोनों का विशेष महत्व है। तर्क और श्रद्धा ये दोनों मनुष्य के विचार और आचरण के दो आधार है। एक ओर तर्क व्यक्ति को विचारशील बनाता है, तो दूसरी ओर श्रद्धा उसे आंतरिक शक्ति और प्रेरणा देती है। भारतीय दर्शन में इन दोनों को पूरक माना गया है, न कि विरोधी।

1) तर्क (Reason) का अर्थ:
तर्क का अर्थ है – विवेकपूर्ण सोच या बुद्धिसंगत विचार। तर्क वह शक्ति है जिसके द्वारा हम सत्य और असत्य, उचित और अनुचित का निर्णय करते है। यह मनुष्य को अंधविश्वास और अज्ञान से मुक्त करता है। जैसे: जब कोई व्यक्ति किसी धार्मिक सिद्धांत या सामाजिक नियम को समझने के लिए प्रश्न करता है और प्रमाण चाहता है – यह तर्क की प्रवृत्ति है।

2) श्रद्धा (Faith) का अर्थ:
श्रद्धा का अर्थ है विश्वास, भक्ति या आंतरिक निष्ठा। यह मनुष्य की आत्मा की वह शक्ति है जो उसे ईश्वर, सत्य और नैतिकता में विश्वास करने के लिए प्रेरित करती है, श्रद्धा के बिना जीवन में स्थिरता, साहस और प्रेरणा का अभाव होता है, जैसे - किसी विद्यार्थी का अपने गुरू पर विश्वास, या किसी भक्त का ईश्वर में भरोसा – श्रद्धा के उदाहरण है।

तर्क और श्रद्धा का संबंध :
तर्क और श्रद्धा दोनों विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। तर्क सत्य की खोज में सहायक है। श्रद्धा उस सत्य को स्वीकार करने की आंतरिक शक्ति देती है। जहाँ केवल श्रद्धा हो और तर्क न हो, वहाँ अंधविश्वास उत्पन्न होता है। जहाँ केवल तर्क हो और श्रद्धा न हो, वहाँ संशय और नास्तिकता पैदा होती है। इसलिए संतुलन आवश्यक है।

तर्क और श्रद्धा का संतुलन :
तर्क और श्रद्धा का संतुलन मनुष्य के नैतिक और धार्मिक जीवन के लिए आवश्यक है। तर्क हमें सोचने और समझने की क्षमता देता है। श्रद्धा हमें आंतरिक शांति और विश्वास प्रदान करती है। जब दोनों एक साथ होते हैं, तब जीवन ज्ञानमय और आध्यात्मिक बनता है।

निष्कर्ष :
तर्क और श्रद्धा जीवन की दो महत्वपूर्ण शक्तियाँ हैं। तर्क हमें ज्ञान का मार्ग दिखाता है, जबकि श्रद्धा हमें विश्वास और प्रेरणा देती है। दोनों के संतुलन से ही मनुष्य का नैतिक, धार्मिक और बौद्धिक विकास संभव है।